'मधुबनी–द ऑर्ट कैपिटल' पुस्तक के लोकार्पण समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–14.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11:00 बजे, स्थान–होटल मौर्या)

राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ॰ जगन्नाथ मिश्रा जी, पूर्व मंत्री श्री नीतीश मिश्रा जी, एल॰एन॰ मिश्रा कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के रजिस्ट्रार श्री डी॰के॰एस॰ शेखर जी, इसी वर्ष पदम्श्री अवार्ड प्राप्त करने वाली मधुबनी चित्रकला की प्रसिद्ध कलाकार श्रीमती बऊआ देवी जी, कार्यक्रम में उपस्थित प्राध्यापकगण, गणमान्यजन, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !!

'मधुबनी– द आर्ट कैपिटल' यानी कलात्मक राजधानी –ये सिर्फ एक किताब का नाम नहीं है, बल्कि इस शीर्षक में मिथिलांचल की समृद्ध विरासत समाहित है। यह एक सच्चाई है कि बिहार में कला की उत्कृष्टता की कहानी मधुबनी के बिना पूर्ण ही नहीं हो सकती। वस्तुतः ''मधुबनी–द आर्ट कैपिटल'' पुस्तक का विमोचन करना मेरे लिए प्रसन्नता की बात है।

इस प्रकाशन के लिए प्रथमतः मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ 'ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट' का, जिसने अथक परिश्रम करके इसे हम सबके समक्ष लाने का काम किया। जब 1973 में ललित नारायण मिश्र कॉलेज की स्थापना हुई थी, उस वक्त प्रबंधन शिक्षा के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। आज प्रबंधन और सूचना तकनीक की शिक्षा के क्षेत्र में बिहार के ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को यह एक श्रेष्ठतम संस्थान मिला है। मुझे बताया गया है कि ललित नारायण मिश्र कॉलेज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी (यू॰के॰) के साथ मिलकर अंग्रेजी की शिक्षा को भी आगे बढ़ा रहा है। ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुजफ्फरपुर में पिछले वर्ष 3 फरवरी को आयोजित 'स्किल इंडिया टू स्किल्ड इंडिया कार्यक्रम' के उद्घाटन–समारोह

में सम्मिलित होने का मुझे अवसर मिला था। महाविद्यालय–परिवार समय–समय पर विभिन्न आयोजनों के माध्यम से अपने शैक्षणिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करता रहा है। इसी क्रम में यह कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है। इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन लोगों और संगठनों ने अपना योगदान दिया है, वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं।

आज लोकार्पित हुई पुस्तक अत्यन्त रोचक, सारगर्भित और ज्ञानवर्द्धक है। इसमें मिथिलांचल, मैथिली भाषा, रामायण काल समेत ऐतिहासिक विरासतों, मधुबनी पेंटिंग, विभिन्न धरोहरों, पर्यटन–स्थलों आदि से जुड़ी तमाम जानकारियाँ रोचक भाषा–शैली में समाहित की गई हैं।

मैं ऐसा मानता हूँ कि मधुबनी सिर्फ एक स्थानवाचक संज्ञा नहीं है, बल्कि यह तो एक सम्पूर्ण विचार–प्रणाली है, जिसने हमारी संस्कृति को करीब से देखने का हमें मौका दिया है। चाहे वह मधुबनी पेंटिंग हो, जिसमें भारत के महान पौराणिक ग्रन्थों के पात्रों को एवं समाज में उपस्थित आस–पास की हलचलों को बड़े ही कुशल तरीके से चित्रित किया गया है या वह राजनगर की अद्‌भुत वास्तुशिल्प–कला हो, जो आज भी बिहार की बौद्धिक सम्पदा की परिपक्वता को दर्शाता है। एक तरफ, यहाँ बलिराजगढ़ की ऐतिहासिकता अपनी विशालता के साथ खड़ी है, तो वहीं दूसरी तरफ मैथिली भाषा की मधुरता सहज ही अपनत्व का भाव हृदय में भर देती है।

मिथिला लोक चित्र शैली का उद्‌भव मिथिलांचल के लोक जीवन से हुआ है। यूँ तो इस चित्र–शैली का विकास दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सुपौल और पूर्णिया जिलों तक प्रसरित है, किन्तु मधुबनी इसका केन्द्रीय स्थल है। यही कारण है कि इसे मधुबनी पेंटिंग के नाम से लोक ख्याति मिली है। इस चित्रकला पर विद्यापति के मार्मिक गीतों, शैव और शाक्त भक्ति–साधना

तथा वैष्णव भक्ति की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दोनों परम्परा से जुड़ी कथाओं का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। मधुबनी पेंटिंग से लोक अभिरूचि, लोक–परम्परा और लोक–संस्कृति के अभिन्न जुड़ाव ने इसे काफी सौंदर्य प्रदान किया है।

मधुबनी पेंटिंग में श्रीमती सीता देवी जी को सन् 1969 में बिहार सरकार द्वारा सम्मानित किया गया था। श्रीमती जगदम्बा देवी को 1975 में, श्रीमती गंगा देवी को 1984 में तथा श्रीमती महासुन्दरी देवी को 2011 में 'पदम्श्री' अवार्ड प्राप्त हुआ था और अब इस वर्ष श्रीमती बऊआ देवी जी को 'पदम्श्री' सम्मान मिला है, जिससे ना केवल मधुबनी पेंटिंग की ख्याति बढ़ी है, बल्कि बिहार को भी गौरव प्राप्त हुआ है। मैंने इन्हें मीडिया के माध्यम से पहले बधाई दी थी और आज पुनः इन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ और कामना करता हूँ कि ये स्वस्थ–सानन्द रहते हुए अपनी कला का आगे भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करती रहें।

बंधुओं, इन समस्त विशेषताओं के बावजूद, मधुबनी के सन्दर्भ में समस्त सूचनाओं के संकलन की कमी काफी समय से महसूस की जा रही थी और इसी आलोक में यह पुस्तक हमारे सामने मौजूद है, जिसमें अत्यन्त ही सहज रूप से छायाचित्रों के माध्यम से विभिन्न विषयों को प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के अध्ययन से मधुबनी की एक पूरी तस्वीर हमारे मन एवं मस्तिष्क पर अंकित होती है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक ज्यादा–से–ज्यादा लोगों को मधुबनी की ऐतिहासिक कला की प्रासंगिकता से अवगत कराएगी। खासकर 'आर्ट ऑफ टूरिज्म' अर्थात् कला–पर्यटन की दिशा में यह प्रयास काफी महत्त्वपूर्ण है, जो बिहार पर्यटन को एक नया आयाम प्रदान करेगा। आशा है कि इस प्रकार का प्रयास विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए अत्यन्त उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होगा। इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए

मैं डॉ॰ जगन्नाथ मिश्र, श्री नीतीश मिश्र एवं समस्त एल॰एन॰ मिश्रा कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट परिवार को बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।